



नई दिल्ली
अंक - 128

श्री साई शके : 32
फरवरी, मार्च - 2014

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥

॥ ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः॥

: पंचामृत अभिषेक :



Publisher

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com



Patron

Lalita Bhavani Shankar Bhatte



Editorial

Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover



Subscription

Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00



Overseas

Yearly : US\$ 250.00
Life time : US\$ 500.00



Printed By

Shaarp Advertising
Cell : 09810284136



Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरु बंधुभगिनीयों से

इस मानवीय जन्म में हर एक व्यक्ति को ईश्वर ने 6 माध्यम दिये हैं। काया-वाचा-मन और स्थूल देह-सूक्ष्म देह-कारण देह।

इन 6 माध्यमों से दो माध्यम, मन और कारण देह - हर जन्म में हमारे साथ रहते हैं और बाकी के चार माध्यम मतलब काया, वाचा, स्थूल देह और सूक्ष्म देह हर एक जन्म में नये प्राप्त हुए हैं। इन चार माध्यमों का विकास करके, हम में से प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त जीवन का सार्थक करना होता है।

संसार में कई लोग यह उपदेश ओरों को देते रहते हैं कि प्राप्त जीवन की सार्थक करना चाहिए, लेकिन यह सार्थक किस प्रकार करना है, दैहिक माध्यम कौन से हैं, उनका विकास किस प्रकार करना है, विकास हुआ या नहीं इसका अनुमान कैसे लगाते हैं, ईश्वर की पूजा क्यों करनी है, किस प्रकार करनी है और कितनी बार करनी है इत्यादि। इन अनेक सवालों का शास्त्रीय विवेचना वं. दादा जी ने हम सभी को प्रदान की है। ईश्वर की भक्ति/साधना ज्ञान से, समझकर करने में जो समाधान है, उसका कोई मोल नहीं (तुलना) नहीं है।

इस भाग में हम स्थूल देह, सूक्ष्म देह और कारण देह का संक्षिप्त रूप से विचार करते हैं।

जो शरीर हमें आमतौर से नज़र आता है उसे स्थूल देह याने Physical body कहते हैं। यह स्थूल देह पंचमहाभूत तत्वों से मतलब (पृथ्वी, आप, तेज, वायु और आकाश) इन तत्वों से बना है। यह स्थूल देह गुरुत्वाकर्षण (Gravitational force) में बद्ध है और इसी Gravity में अनेक विषय से स्वाभाविक रूप से स्थूल देह को आसपास के विषयों के प्रति आसक्ति होती है।

स्थूलदेह के अंदर सूक्ष्म देह और उसके अंदर कारण देह होता है। कारण देह याने आत्मा और जन्म के कारण का अस्तित्व। हमारे जन्म या अस्तित्व का कारण हमारी आत्मा के साथ हमेशा रहता है और जब प्राप्त जीवन उस दिशा में व्यतीत होने लगता है तो आंतरिक समाधान (Inner peace) प्राप्त होने लगता है क्योंकि वह कारण कार्यान्वित होता देखकर आत्मा संतुष्ट होने लगती है। कोई भी व्यक्ति गुजर जाने के बाद यह कारण देह ऊपर (प्रध्वे दिशा में) उसके विकास के मुताबिक स्थान प्राप्त करके फिर से जन्म लेने की तरतूद करने के लिए जाता है और पंचमहाभूत तत्वों से बना स्थूल देह निसर्ग के पंचमहाभूत तत्वों में विलीन हो जाता है।

कारण देह में Gravity नहीं होती लेकिन स्थूल देह Gravity में रहती है। इन दोनों माध्यमों के बीच की दुआ (Connection) याने सूक्ष्म देह, जो अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह

सूक्ष्म देह, जो अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह सूक्ष्म देह, स्थूल देह और कारण देह के बीच में कार्यरत होकर प्राप्त जीवन का विकास और उसे सार्थक करना यह इस सूक्ष्म देह के विकास पर आधारित होता है। सूक्ष्म देह को दोनों के बीच में होने के कारण उसे दैहिक अवस्था और आत्मिक अवस्था याने स्थूल स्वरूप और सूक्ष्म स्वरूप इन दोनों के बीच में झुकाना पड़ता है। सूक्ष्म देह पंचप्राण कोशों से बनता है, जिसमें अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश यह पाँच कोश होते हैं।

स्वाभाविक स्वरूप में स्थूल देह की प्रबलता याने दैहिक प्रबलता अधिक होने के कारण यह पाँच कोशों का कार्य हमारे जीवन में दैहिक स्वरूप में याने सिर्फ स्थूल स्वरूप में रहता है। मतलब.....

* **अन्नमय कोश** : खाना, पीना, एशो आराम, नई-नई चिजें खरीदना इत्यादि। याने जो भी दैहिक भूक है, विषयों की भूक है वह बढ़ाते रहना और उसी के लिए जीना। जीवन व्यतीत करना।

* **प्राणमय कोश** : याने प्राणों के अस्तित्व का कारण मतलब जीवन का ध्येय (Aim of life)। आज हमारा ध्येय क्या है तो ज्यादा से ज्यादा पैसा किस प्रकार मिले और दैहिक विषय बढ़ाकर सुखों के साधन ज्यादा से ज्यादा कैसे प्राप्त करें। या फिर किसी दूसरे व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए हम जी-जान लगा देते हैं।

* **मनोमय कोश** : इस कोश का दैहिक स्वरूप मतलब असंख्य विचार। सुबह उठने के बाद दातों को मंजन करते समय से रात को सोने तक अगणित विचार आते रहना। इन विचारों में भावनावश होते रहना, दूसरों के बारे में बुरी बातें बोलना और किसी के पास अगर कोई अच्छाई हो तो उसकी अच्छाई के बदले उसमें जो बुराई है उसके बारे में बातें फैलाना इत्यादि।

* **विज्ञानमय कोश** : इसकी स्थूल अवस्था में हम ज्ञान की प्राप्ति समाधान के लिए नहीं बल्कि दूसरों को नीचा दिखाने के लिए करते हैं और हमेशा हमारा बर्ताव इस प्रकार रहता है कि हम कितने महान हैं। यानी अंहभाव पूरी तरह भरा होता है।

* **आणंदमय कोश** : दैहिक अवस्था में इस कोश की कमी होती है, इसलिए सच्चा आनन्द या समाधान का अनुभव दैहिक अवस्था में नहीं आ पाता। इसलिए संसार में आदमी सुखों के, साधनों के पीछे भागता नज़र आता है लेकिन इस प्राप्त किये हुए सुख का समाधान या शांति का वह अनुभव नहीं ले पाता। हम कहते हैं कि जीवन गतिमान हो रहा है, फैशन या ट्रेन्ड फास्ट चेंज हो रहा है क्योंकि लिये हुए सुखों का समाधान ज्यादा समय तक नहीं टिकता और कम्पनियों में होड़ लगी हुई है। आत्मिक अवस्था या सूक्ष्म अवस्था की कमी की वजह से समाधान की कमी का अनुभव होता है इस गति का आगे क्या होगा यह किसी को नहीं पता और इसलिए इन शक्तियों को योग्य दिशा में संक्रमित करके, मानवीय जीवन का विकास कर उनकी आत्मिक अवस्था बढ़ाकर धीरे-धीरे मानवीय जीवन ईश्वरमय हो और हम सभी के जन्म का कारण उदीत होकर कार्यान्वित हो, इसी विशाल दृष्टि से यह दैवी कार्य वं. दादा जी ने दिव्य पूण्य विभूतियों के साथ आगे बढ़ाया है।

आज के समय में आदमी ईश्वरीय उपासना से वंचित हो गया है न उसे उपासना सिखाने वाला कोई है और न ही उसके पास उपासना करने के लिए समय है। आज स्थूल देह से जो भी उपासना ईश्वर की प्रति की जाती है वह केवल एक क्रिया हो रही है क्योंकि उसमें मन या आत्मिक अवस्था नहीं है। आज ईश्वर दैहिक अवस्था में नहीं है, उसकी अवस्था आत्मिक स्वरूप में या सूक्ष्म स्वरूप में होने के कारण उसकी उपासना भी आत्मिक अवस्था में होनी जरूरी है। पुराने जमाने में लोगों के पास काफी वक्त था इसलिए उपासना का प्रकार, क्रिया और फिर कर्म ऐसा था। मतलब दैहिक उपासना करके उस में से आत्मिक उपासना करना।

उपासना करना यह सूक्ष्म देह का कर्त्तव्य है। ईश्वरीय शक्ति का आह्वान, उसकी धारणा याने गुरुशक्ति की धारणा और उसे कार्यान्वित करना, समाधान एवं शांति का अनुभव लेना और दूसरों को देना आदि। सूक्ष्म देह की आत्मिक अवस्था प्रबल करने से होता है। याने पंचप्राण कोशों का विकास करके उनकी दैहिक अवस्था कम करके जब आत्मिक अवस्था बढ़ती है तो स्थूल देह के बदले सूक्ष्म और कारण देह ताकतवर होता है और उसी से जीवन का सार्थक और जन्म का कारण उदित होता है।

इसी अर्थ से हम आरती में "घेउनी पंचारती" जिसमें पंचारती मतलब पांच ज्योत की आरती नहीं तो विकसित पंचप्राण कोश, जिससे ईश्वरीय की आरती करनी होती है।

इसलिए वं. दादा जी ने भी जब गुरु शक्ति भक्तों में संक्रमित की तो पहले विमोचन से दोष दूर किये और फिर गुरुशक्ति पाँच भागों में, पाँच दीक्षाओं के स्वरूप में हमारे सूक्ष्म देह को याने पंचप्राण कोशों को दी।

जब हम वं. दादा जी की पादुका पर या प्रतिमाओं पर पंचामृत अभिषेक करते हैं तो उसके पिछे भावना यह रहनी चाहिये कि वं. दादा जी ने दीक्षा देकर हमारे पंचप्राण कोश जो विकसित किये हैं उनसे गुरु पादुका पर हम अभिषेक कर रहे हैं। इसी स्वरूप में पंचामृत का निर्माण शास्त्र में दिया गया है जो कि सिर्फ अपने स्वास्थ्य के लिए सबसे उत्तम मिश्रण ही नहीं है बल्कि हर सामग्री अपना विकसित कोश दर्शाता है।

* आनन्द मय कोश	—	कारण दीक्षा	—	तुप (घी)
* विज्ञानमय कोश	—	गुरु दीक्षा	—	शक्कर (चीनी)
* मनोमय कोश	—	अनुग्रह	—	मध (शहद)
* प्राणमय कोश	—	नामःस्मरण	—	दही
* अन्नमय कोश	—	उपासना	—	दूध (पंचामृत)

१) उपासना दीक्षा - विकसित अन्नमय कोश - दूध (पंचामृत)

संसार में ज्यादातर व्यक्ति खाना, पीना, कपड़ा-लता, ऐशो आराम मतलब दैहिक अवस्था के अन्नमय कोश के लिए जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे दैहिक विकास नहीं होता तो दैहिक अवस्था में बढ़त होती है मतलब विषय और वासना बढ़ती जाती है। यह जीवन गुजर जाने तक चालू रहता है और दैहिक अवस्था प्रबल होने के कारण उस व्यक्ति के देहांत के पश्चात भी आत्मा को याने कारण देह को विषयों के वलय में रहना पड़ता है। मतलब Gravity force उस पर Effect करता है और वह (Earth bound spirit) अंतराल में भूत, पिशाच के रूप में इहलोक में तड़फता और घूमता रहता है।

यह अवस्था बदलने के लिए अन्नमय कोश को वं. दादा जी ने उपासना दीक्षा दी। उपासना मतलब उप-आसन याने इस प्रकार की गुरुशक्ति धारण कर, कार्यान्वित की, जिससे हमारी आत्मा को उप-आसन मतलब सप्तलोक में आगे की अवस्था के लिए निश्चित स्थान प्राप्त हो। यही उपासन दीक्षा का मतलब है। इससे अन्नमय कोश दैहिक विषय के आधीन न होकर उससे दैहिक पोषण या दैहिक विकास प्राप्त करता है। विकसित अन्नमय कोश, दैहिक अन्न के साथ आत्मिक विकास के लिए जो योग्य, सात्विक और पोषक अन्न है उसे धारण करने का प्रयास करता है जिससे आहार में संतुलन आकर हमारी जरूरतें भी संक्षिप्त हो जाती हैं और उससे प्राप्त हुए सुख में समाधान का अनुभव आने लगता है। इस प्रकार विकसित हुए अन्नमय कोश का प्रतीक याने "दूध" है जो कि शुद्ध, सात्विक अन्न है और हर शिशु का पालन पोषण दूध से होता है। इसलिए पंचामृत करते समय विकसित अन्नमय कोश स्वरूप में हम दूध का उपयोग करते हैं।

२) नामः स्मरण दीक्षा : विकसित प्राणमय कोश - दही (पंचामृत)

हमारे प्राणमय कोश में दृढ़ता और जीवन का ध्येय होता है। उसे वं. दादा जी ने नामःस्मरण दीक्षा देकर गुरुबीज (ॐ श्री साईनाथाय नमः) प्राणमय कोश में धारण करके दिया। अब वह दीक्षा धीरे-धीरे विकास करके हमें श्रद्धा और सबुरी की सिखाई देती है। इस कार्य पर और ऊँकार साधना, आरती, मुलाकात, कामकाज इन साधनों पर की हमारी दृढ़ता बढ़ती है। हमें खुद के उपर भरोसा (आत्मविश्वास) आता है और गुरु के उपर अटूट विश्वास पैदा होता है। जीवन सार्थक हो, हमारा कोई तो लाभ दुनिया के लिए हो ऐसी भूक अंदर पैदा होती है और हम उस दिशा में प्रयत्न करने लगते हैं। यह विकसित प्राणमय कोश की अवस्था दही के स्वरूप में दर्शाई जाती है जिस प्रकार आधा चमच दही भी दूध की पूरी पतली को दूसरे दिन जमा देता है। इसे अपने जैसा कर देता है उसी प्रकार वं. दादा जी ने हमारे अंजाने में दी हुई नामःस्मरण दीक्षा / गुरु शक्ति का बीज, हमारे प्राणमय कोश को धीरे-धीरे जमा देता है और गुरु शक्ति स्वरूप कर देता है। जिससे गुरु के उपर श्रद्धा, विश्वास व्यक्त होता है। इसीलिये विकसित प्राणमय कोश के स्वरूप में पंचामृत करते समय दही का उपयोग करते हैं।

३) अनुग्रह दीक्षा : विकसित मनोमय कोश - मध (शहद) (पंचामृत)

वं. दादा जी ने तीसरी दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा हमारे मनोमय कोश में संक्रमित की है। पहली दो दीक्षाओं से जब अन्नमय कोश विकसित हो जाता है और प्राणमय कोश भी विकसित होकर जीवन का ध्येय पहचान पाता है, हमारी निष्ठा श्री गुरु पर दृढ़ होने लगती है, तब हमारा जीवन जो कि हमारे ऋणानुबंध के आधीन होता है मतलब देव-देवता, माता-पिता, इतरेजन, आदि पर निर्भर होता है, उसे श्री गुरु अनुगृहीत करके गुरु शक्ति के आधीन करते हैं। हम गुरु की छत्रछाया में आ जाते हैं। तब मनोमय कोश का विकास होकर जो मन अस्थिर या अगणित विचारों से परेशान या वह स्थित और निश्चित विचार करने लगता है। जो मन पहले अन्य व्यक्तियों की बुराईयाँ दुंदने में और उसके बारे में बातें करने में मशगुल रहता था वह अब दूसरो की बुराई सुनना पसंद नहीं करता बल्कि हर एक मिलने वाले आदमी में क्या अच्छाई है वह दुंदने का प्रयत्न करता है।

वं. दादा जी कहते थे कि सेवक कैसा हो तो मधुमक्खी जैसा, जिस प्रकार मधुमक्खी एक Honey comb भरने के लिए हमारों फूलों का थोड़ा-थोड़ा मधु इकट्ठा करती है, उसी प्रकार सेवक ने पूरा दिन मिलने वाले हर एक व्यक्ति में से अच्छी चीजे दुंदकर जमा करनी चाहीये तो ही उसका Honey comb गुरु शक्ति से भरेगा।

इसी प्रकार मधु याने विकसित मनोमय कोश का अस्तित्व दर्शाता है और उसी स्वरूप में पंचामृत में "मध" (शहद) का उपयोग किया जाता है।

8) गुरु दीक्षा : विकसित विज्ञानमय कोश : शक्कर (पंचामृत)

गुरु दीक्षा से विकसित हो रहा विज्ञानमय कोश, जो कि पहले अंहभाव दिखाने के लिए या दूसरों को निचा दिखाने के लिए ज्ञान लेता था वह जीवन का ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश में लग जाता है। तब श्री गुरु का/ईश्वर का/ब्रम्हाण्ड का विशाल ज्ञान और विशाल रूप समझकर खुद के अस्तित्व को वह भूल जाता है जीवन में गुरुकृपा से कुछ अच्छा हो और जो भी अच्छा हुआ वह श्री गुरु की वजह से हुआ, ऐसी सोचा मतलब ऐसा विचार-आचार और उच्चार इस गुरु दीक्षा से विकसित हुए विज्ञानमय कोश की होती है। अंहभाव पूरी तरह नष्ट होकर आसपास के हर एक विषय में श्री गुरु से प्राप्त हुए ज्ञान का एक छोटा सा भाग मिला के सभी को मिठास मतलब खुशी प्राप्त कर देता है उसे शक्कर (दर्शाती) करती है। जिस प्रकार छोड़ी सी शक्कर डालने से हर एक चीज मिठी हो जाती है, उसी प्रकार विकसित विज्ञानमय कोश से वातावरण में हमेशा मिठास, खुशी झलकती है।

इसलिए पंचामृत में शक्कर का उपयोग विकसित विज्ञान कोश दर्शाने के लिए किया जाता है।

9) कारण दीक्षा - आनंदमय कोश - तूप (घी)

जिस प्रकार दूध में सूक्ष्म रूप से "घी" होता है उसी प्रकार अन्नमय कोश के सूक्ष्म रूप में आनन्दमय कोश व्यक्त होता है। इसका अनुभव लेना याने अन्नमय कोश को आनन्दमय कोश में विलिन करना। जब कारण दीक्षा से आनंदमय कोश जागृत होता है तब हमें गुरुकृपा से अपने जीवन का कारण और जन्म का कारण इसका ज्ञान होता है और उसकी पहचान हमेशा रहती है। आज भी हमें कभी-कभी वह कारण का ज्ञान होने के बावजूद हम फिर अन्नमय कोश के अन्य विषयों में गुम हो जाते हैं लेकिन विकसित आनन्दमय अवस्था में जीवन का ध्येय, जीवन का कारण बनता है और हमारा आचार, उच्चार और विहार, आहार और विचार श्री गुरु कृपा से उसी दीक्षा में होता है। जिससे ओरों को भी योग्य दीक्षा प्राप्त करने में मदद होती है। इसलिए "घी" का उपयेग विकसित आनन्दमय कोश दर्शाने के लिए पंचामृत में किया जाता है, जो कि हमारे शरीर के लिए पोषक है और जिसमें ज्योत भी जलती है।

इस भावना से पंचप्राण कोशों के विकसित रूप में हमने अगर पंचामृत अभिषेक किया तो उसका लाभ सिर्फ क्रिया करने से कई गुना ज्यादा होगा।

वं. दादा जी ने यह पंचामृत अभिषेक विधी पूजा के लिए न करते हुए दीक्षाएँ देकर हमारे पंचप्राण कोशों पर किया है, जिसके उपकारों का स्मरण हमें हमेशा रहना जरूरी है और हमें श्री गुरु ने प्रदान की दीक्षाओं की धारणा हम ज्यादा से ज्यादा किस प्रकार करें और कार्यान्वित किस प्रकार करे, उसके लिए योग्य प्रयत्न हमारे माध्यम से होते रहे यही परम पूज्यनिय बाबा और श्री सद्गुरुनाथ दादा इनके चरणों में प्रार्थना।

जब वं. दादा जी ने पाँचवे सेमिनार में पंचामृत विधी के बारे में कहा था जब सभी को यह लिखने के लिए कहा था कि,

"भगवान को प्रसन्न करने के लिए जो पंचामृत विधी (दूध, दही, शहद, शक्कर, घी) भगवान के लिए औपचार स्वरूप में करते हैं, उसी प्रकार की विधी से गुरुकृपाशीर्वाद से हम भक्तों का कल्याण करने के लिए श्री सद्गुरु ने पाँच दीक्षांत विधी के माध्यम से हमारे जीवन का पंचामृत हो, इसलिए औपचार न करके उपचार स्वरूप में किया है।

॥ शुभं भवतु ॥

जन्म जन्म का सेवक

“साई निकेतन”

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई-मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

“Sai Niketan”

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible